विद्युत दर्पण

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति

त्रैमासिक गृह पत्रिका

अंक - 34 पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, एफ-3, एमआईडीसी क्षेत्र, मरोल, अंधेरी (पूर्व), मुंबई -93 **अक्तूबर - दिसम्बर 2014**

सम्पादकीय

साथियों,

जैसा कि आप सभी को विदित है पश्चिम क्षेत्र संस्थापित क्षमता के मामले में सबसे बड़ा क्षेत्र है । पश्चिम क्षेत्र में सीजीपीएल मुन्द्रा एवं ससन में प्रति 4000 मे.वा. की रेंज की दो अल्ट्रा मेगा बिजली परियोजनाएँ हैं । साथ ही, मुंद्रा में 4000 मे.वा. की रेंज की दो अल्ट्रा मेगा बिजली परियोजनाएँ हैं । साथ ही, मुंद्रा में 4000 मे.वा. का अदानी विद्युत केन्द्र भी है । अत:, मुन्द्रा अर्थात गुजरात के अंतिम छोर पर हमारी 8000 मे.वा. विद्युत उत्पादक क्षमता है । इन संयंत्रों के ट्रिपिंग की स्थिति में चुनौती निर्माण होती है । ये रिमोट विद्युत केन्द्र हैं, जिनसे लोवर वोल्टेज लेवल कनेक्टिविटी नहीं है । ब्लैक स्टार्ट पावर की आवश्यकता काफी अधिक है और आसपास कोई हाइड्रो या गैस विद्युत केन्द्र न होने से कठिनाई और बढ़ जाती है । पश्चिम क्षेत्र ने 32 स्थान चुने हैं, जहाँ ब्लैक स्टार्ट सुविधा उपलब्ध है और 9 स्थानों पर पहले ही ब्लैक स्टार्ट के लिए मॉक ड्रील किया गया । हम बड़े संयंत्रों के लिए 220 / 132 कि.वो. ब्लैक स्टार्ट पाथ उपलब्ध कराने की कोशिश कर रहे हैं । दिनांक 30 एवं 31 जुलाई 2014 के ग्रिड व्यवधान के बाद हम हम अधिक सतर्क हो गये हैं. ग्रिड व्यवधान से बचने एवं ब्लैक आउट की स्थिति में प्रणाली को पुन: कार्यरत करने के लिए हम हर संभव कोशिश कर रहे हैं ।

सुप्रसिद्ध विद्वान जार्ज कार्लिन का निम्न विचार विद्युत के सुनियोजन का महत्व प्रतिपादित करता है:-

"विद्युत का सुनियोजन ही वास्तव में विद्युत है ।"

आप सभी को ब्लैक आउट मुक्त आगामी वर्ष की शुभकामनाएँ ।

सु. द. टाकसांडे

सु.द. टाकसांडे
सदस्य सचिव

**जहाँ एकता और एकाग्रता की शक्ति है,
वहाँ सफलता सहज प्राप्त होती है ।**

राजभाषा समाचार

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उत्तर मुंबई की 16 वीं बैठक दिनांक 22.11.2014 को केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, यारी रोड, अँधेरी में आयोजित की गई थी, जिसमें श्री सत्यनारायण एस., अधीक्षण अभियंता, श्री लक्ष्मीकांत सिंह राठौर, उप निदेशक / सहायक सचिव एवं श्रीमती तरूप्रभा शैल, हिन्दी अनुवादक ने भाग लिया ।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 108 वीं बैठक दिनांक 7 नवम्बर 2014 को श्री सु.द.टाकसांडे, सदस्य सचिव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । बैठक में राजभाषा नीति अनुपालन से संबंधित सभी मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया ।
- दिनांक 22.12.2014 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में 'राजभाषा नीति अनुपालन एवं प्रगति विषय में श्री सु.द. टाकसांडे, सदस्य सचिव ने संबोधित किया । कुल 9 अधिकारी एवं 11 कर्मचारियों ने इस कार्यशाला का लाभ लिया ।
- हिन्दी पखवाड़ा 2014 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं जिनका पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 5.11.2014 को सम्पन्न हुआ ।
- भारतीय राजभाषा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 20.11. 2014 से 22.11.2014 तक शिर्डी में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में श्रीमती तरूप्रभा शैल, हि.अनु. ने भाग लिया ।
- भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की सहायक निदेशक, सुश्री सुष्मिता भट्टाचार्य द्वारा दिनांक 17.12.2014 को कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया ।

समाचार दर्पण

हार्दिक बधाई

- श्री अनिष, अ.श्रे.लि. ने दिनांक 28.10.2014 को कार्यालय में कार्य ग्रहण किया ।
- श्री ब्रहम सिंह, अ.श्रे.लि. ने दिनांक 22.12.2014 को कार्यालय में कार्य ग्रहण किया ।

पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति परिवार में हार्दिक स्वागत !

संपादक मंडल : श्री सु. द. टाकसांडे, सदस्य सचिव श्रीमति तरूप्रभा शैल, सहा. निदे. (रा.भा.), श्री शिव कुमार हरिद्वाज, आशुलिपिक

- ❖ दिनांक 25.09.2014 से 02.10.2014 तक स्वच्छता सप्ताह मनाया गया । दिनांक 02.10.2014 को स्वच्छता सप्ताह अभियान के अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा सदस्य सचिव जी ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्धारित शपथ पत्र के अनुरूप शपथ दिलवाई ।
- ❖ स्व. सरदार वल्लभ भाई पटेल की वर्षगाठ दिनांक 31 अक्तूबर 2014 को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया । इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया ।

*****

पुस्तकों का हमारे जीवन पर प्रभाव

शिव कुमार हरिद्वाज,
आशुलिपिक -II

मानव की प्रवृत्ति हमेशा जिज्ञासु रही है । आदिकाल से मानव किसी न किसी चीज की जानकारी प्राप्त करता रहा है । इस जानकारी अथवा ज्ञान को वह पुस्तकों के माध्यम से संजोये रखा है । आदिकाल में आधुनिक संसाधन उपलब्ध नहीं थे, फिर भी ऋषि - मुनि एवं संत ताड़ के पत्तों / पन्नों पर लिखकर अपने ज्ञान को संजोये रखते थे ।

बालक जब दो -ढाई वर्ष का होता है तो उसकी परवरिश करने वाले माता-पिता, गुरू उसे कविता, कहानियों के माध्यम से ज्ञान देते हैं । वह जब पढ़ने जाता है तो शिक्षक, गुरू उसे पुस्तकों के माध्यम से उसके मन में ज्ञान रूपी प्रकाश भरते हैं । यही ज्ञान उसे बड़ा होकर अपने जीवन के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है ।

पुस्तकें अकेलापन को दूर करती हैं । वह मानव को जीवन के हर क्षेत्र चाहे वह तकनीकी हो, साहित्यिक हो, व्यावहारिक हो अथवा आध्यात्मिक हो के ज्ञान से भर देती हैं । आज भी महापुरूषों की जीवनी, आत्मकथा का पुस्तकों में उल्लेख किया जाता है । इसके माध्यम से हमें वह ज्ञान प्राप्त होता है जो किसी माध्यम से नहीं होता । बार-बार पुस्तकों को पढ़ने से हम अपने ज्ञान को और अधिक बढ़ाते हैं, जिससे जीवन में सफल होते हैं ।

आदिकाल के ग्रंथों का ही उदाहरण लीजिए- रामायण, महाभारत, गीता बाइबल, कुरान ये सब मानव को आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, जिससे मानव अपने जीवन में अच्छे संस्कार, जीवन जीने की कला आदि से अच्छा जीवन व्यतीत करता है ।

हमें दूर-दराज के क्षेत्रों की जानकारी देश-विदेश की वेशभूषा, वहाँ की तकनीक, स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान, वैज्ञानिक जानकारी आदि पुस्तकों के माध्यम से भी प्राप्त होती है ।

बेचैनी और निराशा के दौर से गुजरने वाले मरीजों को डॉक्टर मनोरंजक साहित्य और आध्यात्मिक पुस्तकों को पढ़ने की सलाह देते हैं । इससे बीमार, रोगी अपनी बीमारी से निजात पा जाते हैं । अच्छा साहित्य या अच्छी पुस्तकें मानव को जीने की कला सीखाती हैं ।

मुझे आज भी याद है जब बचपन में मेरे दादाजी सावन के महीने में सुबह हम लोगों को पास बैठाकर रामायण का पाठ करते थे । हमें इससे यह प्रेरणा मिलती थी कि हम भी उसमें बताई गई बातों का मनन चिंतन करें और सतमार्ग पर चलें । इससे यह भी फायदा होता था कि सभी घर के सदस्यों में आपसी प्रेम और ज्यादा मजबूत हुआ ।

मैं जब मुंबई में अकेला रहता था तो अपने कार्यालयीन समय के पश्चात काफी समय अकेलापन में बिताना पड़ता था । इस अकेलेपन को दूर करने के लिए मैंने योग आसन एवं प्राणायाम की पुस्तकों का अध्ययन करना शुरू कर दिया । इन पुस्तकों को पढ़ते-पढ़ते और आसन एवं प्राणायाम करते -करते मुझे यह ज्ञान प्राप्त हो गया कि मैं बिना गुरू के भी कई आसनों को अच्छी तरह कर सकता हूँ और इसके साथ ही प्राणायाम भी । जब भी हमारा मन बेचैन हो जाये, अथवा हम निराश हों तो हमें अच्छी पुस्तकें पढ़ना चाहिए । इससे हमारी बेचैनी दूर होती है और खाली दिमाग शैतान का घर वाली कहावत भी चरितार्थ नहीं होती ।

अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन भी पुस्तक प्रेमी थे । इससे पुस्तक का महत्व प्रतिपादित होता है । पुस्तकें हमें ऐसा ज्ञान दे सकती हैं जो हमारा सच्चा मित्र भी नहीं दे सकता ।

पुस्तकों का प्रभाव निम्न बातों से और अधिक बढ़ जाता है :-

महात्मा गाँधी जी से एक व्यक्ति ने पूछा कि क्या रामायण सही है? उन्होंने उत्तर दिया कि जब रामायण लिखी गई थी तब तो मैं नहीं था किन्तु उसे पढ़कर मैं और अधिक सही हो गया । आप भी इसे आजमा सकते हैं ।

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने निजी सचिव की भर्ती के लिए उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया । साक्षात्कार के पहले उन्होंने जिस रास्ते से उम्मीदवार आ रहे थे उस रास्ते में एक पुस्तक रखवा दी। उम्मीदवार आते और साक्षात्कार देकर चले जाते यह क्रम चलता रहा किंतु एक उम्मीदवार ऐसा भी था जिसने सर्वप्रथम उस पुस्तक को रास्ते से उठाया और उसे साफ कर अब्राहम लिंकन की मेज पर रख दिया । वह पुस्तक प्रेमी था और इतनी ही बात से वह अब्राहम लिंकन का निजी सचिव बन गया ।

पुस्तकों को उपहार स्वरूप देने से भी इनका प्रभाव अधिक बढ़ जाता है । अभी हमारे समाज में यह चलन नहीं है लेकिन हाल ही में इस बात का महत्व इन पंक्तियों में देखने को मिलता है-

मुंबई के समीप ठाणे जिले के महानगर पालिका के कमिश्नर श्री असीम गुप्ता को यह बात सूझी और उन्होंने उपहार के रूप में नव नियुक्त मेयर श्री सुनील मोरे का स्वागत पुष्प गुच्छ न देकर उपहार स्वरूप शिवाजी सावंत द्वारा लिखित युगान्तर देकर किया ।

पुष्प गुच्छ तो मेज पर रखने से कुछ समय पश्चात मुरझा जाता है किंतु पुस्तक ज्ञान का साक्षात माध्यम है जिससे पीढ़ी दर पीढी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।

आज भी हमें देखने को मिलता है कि सुशिक्षित, उच्च दर्जे का वैज्ञानिक, डॉक्टर पुस्तकों का हमेशा सहारा लेता है उसके कक्ष में कुछ नहीं तो पुस्तकें अवश्य मिलती हैं ।

अरबी में एक कहावत है आपके जेब की पुस्तक बगीचा है । जिस प्रकार बगीचे में गुलाब के फूल होते हैं, उसी प्रकार काँटे भी होते हैं । हमें पुस्तकों से भी यही प्रेरणा लेनी चाहिए कि अच्छी पुस्तकें जिनमें अच्छा साहित्य हो का अध्ययन, मनन करें । आज अश्लील साहित्य, पुस्तकें बाजार में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं । ये नौजवानों को उनके मन में गलत, कुंठित कार्य करने के लिए उकसाती हैं जिससे समाज में इसका गलत असर पड़ता है तथा नौजवान अच्छे संस्कारों से वंछित रह जाते हैं । अतः हमें अच्छी पुस्तकें, साहित्य का अध्ययन करना चाहिए । आधुनिक युग में ई-बुक का प्रचलन हमारे समाज में हो गया है । ई-बुक अथवा इंटरनेट के माध्यम से कम्प्यूटर पर इन पुस्तकों को डाउन लोड कर पढ़ा जा सकता है । इससे जो पुस्तकों के प्रिंटिंग और रख रखाव में खर्च आता था उससे भी बचा जा सकता है ।

पुस्तकें ही हमारा मित्र हैं । हम हमारे जीवन में आने वाली कठिनाइयों का समाधान उनको पढ़कर, उनसे ज्ञान प्राप्त कर निकालते हैं । वे हमें सच्चे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं । आइये हम सब मिलकर अच्छी पुस्तकें, अच्छा साहित्य पढ़ें जिससे हमारा समाज उच्च जीवन मूल्यों पर जीये, सभ्य समाज हो और देश के अच्छे नागरिक बन सकें ।

(हिन्दी पखवाड़ा 2014 - निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त)

*****